an>

title: Need to release a commemorative stamp in honour of Jhala Manna, the great hero and loyal associate of Maharana Pratap.

SHRI GAJENDRA SINGH SHEKHAWAT (JODHPUR): बडीसादड़ी के राज राणा झाला मन्ना की 7 पीढ़ियों ने सन 1527 से 1576 के काल खण्ड में मेवाड़ व राजपुताना पर विदेशी हमलावरों से युद्ध करते हुए मैदान में प्राण न्यौछावर किये हैं। झालामन्ना का पिरवार हल्वद काठियावड गुजरात से राज्य छोड़ कर महाराणा रायमल के शासन काले में मेवाड़ आ गेया था। उस समय मेवाड़ की जागीर व्यवस्था उत्कर्ष पर थी। मेवाड़ के कई गांवों को झालाओं ने अपने अधिकार में कर मेवाड़ पर आधिपत्य स्थापित किया था। तब 7 वर्ष तक बडीसादड़ी का ठिकाना राजराणा अजजा को जागीर के रूप में दिया। अज्जा से लेकर आसा तक लगातार छः पीढ़िया लगातार मेवाड़ के लिये सर्वस्त समर्पण करती रही।

मेवाड़ के भविष्य को महाराणा पूताप के हाथों में सुरक्षित समझ कर उनपके साथ सलाहकार के रूप में झालामन्ना सभी महत्वपूर्ण कार्यों और संघर्ष में साथ रहे। 1572 से 1576 तक पूताप के सैन्य संगठन में अग्रणी भूमिका निकर झालामन्ना ने नाकाबन्दी करने में कामयाबी हासिल की। उन्हें हर समय युद्ध की अपरिहार्यता का आभास हो जाता था और सदैव आगे होकर मैदान में डट जाते थे।

18 जून, 1576 को हल्दी घाटी के मैदान में मुगल सेना के सामने जब महाराणा पूताप घिर गये, तब झालामन्ना उस समय उनके साथ ही थे। परिस्थिति को समझते उन्हें एक पल भी नहीं लगा और उन्होंने तुरंत महाराणा पूताप से राजचिन्ह और ध्वज अपने हाथों में ले लिया और महाराणा पूताप को सुरक्षित युद्ध क्षेत्र से बाहर निकालने में सफल रहे। वे स्वयं दुश्मनों से भिड़ गये और पराक्रम को दिखाते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। इस बलिदान स्वरूप झालामन्ना की जागीर बडीसादड़ी को मेवाड़ के राज्य चिन्ह धारण करने व मेवाड़ के महाराणा के बराबर प्रतिष्ठापित होने का अधिकार मिला।

मैं यह अनुरोध करना चाहूंगा कि झालामन्ना के बलिदान को ध्यान में रखते हुए यथाशीघ्र उनका डाक टिकट जारी की जाये, यह उनकी वीरता, सच्ची निष्ठा एवं ईमानदारी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।